International Journal of Arts & Education Research

मूल्य आधारित शिक्षण

निमिषा इलायस*[1], डॉ0 ऋतु भारद्वाज[2]

[1]शोधार्थी, जे.जे.टी.यू., झूंझनूं।
[2]शोध निर्देशिका, जे.जे.टी.यू., झूंझनूं।

वस्तुतः मूल्य परक शिक्षा उन सभी क्रियाओं एवं प्रक्रियाओं की समष्टि है जिनसे व्यक्ति अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, कुशलताओं एवं सृजनताओं से व्यवहारपरक मूल्यों के व्यवहार रूपी प्रतिमानों की रचना करता है। इनका आधार जैवकीय, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं पारिस्थितिकी होता है। जिनका प्रभाव शिक्षा एवं शिक्षक के विभिन्न स्तरों पर दृष्टिगोचर होता है। जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया शिक्षा जीवन का वह आईना है जिसमें मनुष्य अपनी योग्यताओं और क्षमताओं को प्रतिबिम्ब के रूप में देखता है। इसका प्रमुख उद्देश्य ज्ञान पिपासा जगाने के साथ व्यक्ति को संस्कारी विचारवान और संयमी प्राणी बनाना है।

जीवन के सुखद निर्वाह के लिये शिक्षा को धारण करना शिक्षा को ग्रहण करना तथा शिक्षा को प्राप्त करना प्रत्येक मानव मात्र के लिये अति आवश्यक माना गया है। शिक्षा द्वारा ज्ञान तथा विवेक का उदय होता है। इसी विवेक से मनुष्य प्रऔति में उपलब्ध विविध प्रकार की वस्तुओं से तारतम्य स्थापित करने में सक्षम होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा केवल मनुष्य के लिये है। इस सन्दर्भ में अल्तेकर का विचार है कि-"वैदिक युग से लेकर आज तक भारत में शिक्षा का मूल अभिप्राय रहा है कि शिक्षा प्रकाश की वह ज्योति है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ-प्रदर्शन करती है।"

IJAER

*Corresponding Author